36

''ज़्या तुज़्हें विश्वास है?''

बाइबल पाठ #14

V. दूसरे से तीसरे फसह तक (क्रमश:)।

ध. याईर की बेटी को जिलाना (और लहू बहने के रोग वाली स्त्री को चंगा करना) (मज़ी 9:18-26; मरक्कप 5:22-43; लूका 8:41-56)।

न. अन्धों को और एक दुष्टात्मा ग्रस्त आदमी को चंगा करना (और आलोचना सहना) (मज़ी 9:27-34)।

प. नासरत में जाना (और ठुकराए जाना) (मज़ी 13:54-58; मरक्कप 6:1-6; लूका 4:16-31)।

यीशु के गलील की झील के पश्चिमी तट पर लौटने पर, लोगों की भारी भीड़ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी (मरकुस 5:21; लूका 8:40)। वहां उसने एक लड़की को जिलाने सहित कई प्रसिद्ध आश्चर्यकर्म किए। उसके थोड़ी देर बाद, अपने गृहनगर नासरत से आरज़्भ करके वह तीसरी बार गलील में गया।

इस पाठ में मुज़्य शज़्द ''विश्वास'' है। मसीह ने एक स्त्री को चंगा किया, तो कहा ''... तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है'' (मज़ी 9:22)। आराधनालय के एक अधिकारी से उसने कहा, ''... मत डर; केवल विश्वास रख'' (मरकुस 5:36)। दो अन्धों से उसने पूछा कि ज़्या उन्हें विश्वास है कि वह उन्हें चंगा कर सकता है। उनके यह उज़र देने पर कि ''हां, प्रभु,'' उसने कहा, ''तुज़्हारे विश्वास के अनुसार तुज़्हारे लिए हो'' (मज़ी 9:28, 29)। नासरत में ठुकराए जाने पर ''उसने उनके अविश्वास पर आश्चर्य किया'' था (मरकुस 6:6)।

कुछ लोग जो अपने पास आश्चर्यकर्म करने की शज़्तियां होने का दावा करते हैं, वे इन आयतों का इस्तेमाल कर यह सिखाने का प्रयास करते हैं कि यीशु भी तब तक आश्चर्यकर्म नहीं कर सका था, जब तक लोगों ने विश्वास नहीं किया। फिर वे अपनी नाकामियों को यह कहकर टालते हैं कि चंगा न होने वालों का ''विश्वास इतना नहीं था।'' यह सच है कि इन आयतों में विश्वास पर ज़ोर दिया गया है, परन्तु यह सच नहीं है कि यीशु ने उन लोगों के विश्वास पर आश्चर्यकर्म किए, जिनकी उसने सहायता की थी। अपने अध्ययन में अब तक हमने कई ऐसे मामले देखे हैं, जहां विश्वास नहीं था या सज़्भव ही नहीं था।[1] इस पाठ में, एक मरी हुई लड़की को जिलाया गया था और निश्चय ही जी उठने से पहले उसे कोई विश्वास नहीं था।

फिर इन घटनाओं में विश्वास पर ज़ोर ज़्यों दिया गया? यीशु अपनी सेवकाई के एक निर्णायक समय पर पहुंच गया था। इससे पहले उसने कई आश्चर्यकर्म किए थे और उन आश्चर्यकर्मों का एक उद्देश्य विश्वास दिलाना था (यूहन्ना 20:30, 31)। वह जानता था कि कुछ ही महीनों में वह इस पृथ्वी को छोड़कर चला जाएगा। उसके जाने के बाद, पीछे दृढ़ विश्वास वाले लोग होने आवश्यक थे। इसीलिए उसने लोगों से अधिक से अधिक विश्वास करने का आग्रह किया।

इस पाठ के हर भाग में विश्वास और अविश्वास का अन्तर है। निर्णायक प्रश्न यह है कि आप और मैं विश्वास करते हैं या नहीं?

''याईर, ज़्या तुज़्हें विश्वास है?'' (मज़ी 9:18-26; मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56)

विश्वास दिखाया गया (मज़ी 9:18, 19; मरकुस 5:22-24; लूका 8:41, 42)

याईर नाम का एक आदमी यीशु के पास आया। NASB में इस आदमी को ''आराधनालय के अधिकारियों में से एक'' बताया गया है[2] (मरकुस 5:22; देखें लूका 8:41)। हिन्दी बाइबल में KJV की तरह उसे ''आराधनालय के सरदारों में से एक'' बताया गया है। आराधनालय का ''सरदार'' या ''मुखिया'' ''पुरनियों'' की सभा का सदस्य होता था (देखें लूका 7:3), जो आराधनालय के ज़िज़्मेदार लोग होते थे।[3] ''सरदार'' आराधनालय की सेवाओं का इन्चार्ज होता था जिसमें व्यवस्था बनाए रखना (देखें लूका 13:14) और लोगों को पढ़ने या बोलने के लिए बुलाना शामिल था (देखें प्रेरितों 13:15)।[4] यहूदी नगरों में आराधनालय के सरदार का बड़ा सज़्मान था।

मसीह के पास पहुंचकर याईर अपनी बारह वर्ष की बेटी को जो ''मरने पर'' थी, आकर चंगा करने के लिए कहते हुए ''उसके पांवों पर गिरा'' (मरकुस 5:22; मज़ी 9:18; मरकुस 5:23)।[5] इस अधिकारी को पता चला होगा कि यीशु ने कफ़रनहूम के एक अधिकारी के पुत्र को चंगा किया था[6] (यूहन्ना 4:46-53) और यह भी कि उसने उसी नगर के सूबेदार के सेवक को भी चंगा किया था (लूका 7:1-10)। मान मर्यादा सब भूलकर, वह अपनी ''इकलौती बेटी'' की जान की भीख मांगने के लिए प्रभु के कदमों में गिर पड़ा (लूका 8:42)। जैसा कि जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे ने अवलोकन किया है, ''उसकी आवश्यकताएं उसके अभिमान से बड़ी थीं।''[7] ज़्या आपके बच्चे हैं? यदि हैं तो आप याईर के मन की पीड़ा समझ सकते हैं।

यीशु ने उसे मना नहीं किया। उस सरदार के साथ, वह उसके घर की ओर चल पड़ा। उनके कदम धीमे थे; द लिविंग बाइबल में कहा गया है कि वे ''भीड़ में से'' रास्ता बनाते हुए गए (लूका 8:42; मरकुस 5:24, 31 भी देखें)।

विश्वास परखा गया (मत्ती 9:20-22; मरकुस 5:25-36; लूका 8:43-50)

याईर के घर जाते हुए, रास्ते में एक असामान्य बात हुई। इसे ''कोष्ठक में आश्चर्यकर्म'' का नाम दिया गया है, ज़्योंकि यह एक आश्चर्यकर्म की घटना के विवरण में छिपी आश्चर्यकर्म की एक और घटना थी।

यीशु के भीड़ में से जाते हुए, एक दृढ़ निष्ठा वाली रोगी स्त्री लोगों में से निकलती हुई मसीह तक आ पहुंची। वैद्य लूका कहता है कि उसे ''बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था, ... और ... किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी'' (लूका 8:43)। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, वह स्थाई रूप से ''अशुद्ध'' होगी (देखें लैव्यव्यवस्था 15:19, 26)।[8]

मरकुस की समीक्षा लूका द्वारा अपने साथी वैद्यों के प्रति करुणापूर्ण होने की तरह नहीं थी, ज़्योंकि उसने कहा कि उस स्त्री ने ''अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु वह और भी रोगी हो गई थी'' (मरकुस 5:26)। उस जमाने में, अधिकतर वैद्य जड़ी-बूटियों की दवाई के ''कटोरे'' और अन्धविश्वास की रीतियों के ''टब'' के साथ साधारण मनोविज्ञान[9] की ''थोड़ी मात्रा'' मिलाकर रोगी को दे देते थे।

आप किसी ऐसे व्यज़्ति को जानते होंगे, जो कई वर्षों से बीमार हो और कल्पना कर सकते हैं कि यह स्त्री कितनी दुखी होगी। उसका रंग पीला, शरीर दुबला और कष्ट से सुकड़ गया होगा, परन्तु जब उसने सुना कि प्रभु उस ओर आ रहा है, तो उसे भीतर से सामर्थ मिली। वह भीड़ में से निकलती हुई जैसे-तैसे प्रभु के पीछे, इतना निकट पहुंच गई कि वह उसे छू सकती थी।

उसके मन में था कि ''यदि मैं उसके वस्त्र को ही छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी'' (मत्ती 9:21; मरकुस 5:28 भी देखें)। यह आम धारणा थी कि जिन वस्तुओं का सज़्पर्क किसी आश्चर्यकर्म करने वाले व्यज़्ति के साथ हो जाता है, उसे आश्चर्यकर्म या चमत्कार करने की शज़्ति मिल जाती है (देखें मत्ती 14:36; प्रेरितों 19:11, 12)। इस औरत ने सोचा होगा कि यीशु को तंग करना ठीक नहीं होगा, इसलिए उसने उसके वस्त्र को छूने का निर्णय लिया। उसका तर्क जो भी था, परन्तु उसका विश्वास मसीह की सामर्थ में था।

उसने आगे बढ़कर ''उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया'' (मत्ती 9:20)।[10] वस्त्र को छूते ही, ''तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उसने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई'' हूं (मरकुस 5:29)। हमारे यहां, जब लोग बीमार होते हैं, तो ''बुरा लग रहा'' और स्वस्थ होने पर ''अच्छा लग रहा'' कहा जाता है। यह औरत तुरन्त ''बुरा लग रहा'' से ''अच्छा लग रहा'' वाली स्थिति में आ गई थी! मैं उसके शरीर को सीधा होते, उसके गालों पर लाली लौटते और चेहरे पर मुस्कान लौटने की कल्पना कर सकता हूं।

यीशु को तुरन्त पता चल गया कि उसमें से शज़्ति निकली है (मरकुस 5:30क; लूका 8:46)। मैं इस पर अधिक चर्चा नहीं करना चाहता, ज़्योंकि सीमाबद्ध मनुष्य होने के कारण, मैं ईश्वरीय सामर्थ को नहीं समझ सकता, परन्तु वहां हुई बातें मुझे आकर्षित करती हैं। मैं शायद इसे शज़्दों में अधिक ही पढ़ रहा हूं, परन्तु लोग मुझे सुझाव देते हैं कि

आश्चर्यकर्म करने के लिए मसीह को कुछ कीमत चुकानी पड़ती थी। शायद उसके हर आश्चर्यकर्म करने पर उसमें से किसी प्रकार शक्ति निकलती थी,[11] तौ भी उसने इसका कभी हिसाब नहीं लगाया; वह दूसरों तक पहुंचने के लिए कभी मना नहीं करता था।

जब यीशु को लगा कि उसमें से शक्ति निकली है, तो वह रुककर पूछने लगा, ''मेरा वस्त्र किस ने छुआ?'' (मरकुस 5:30ख)। इस पर चेले हैरान हो गए। उन्होंने उज़र दिया, ''तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि किस ने मुझे छुआ?'' (मरकुस 5:31)। इससे हम थोड़ा उलझन में पड़ जाते हैं। ज़्या इसका अर्थ यह है कि मसीह को कुछ पता नहीं था कि वह स्त्री कौन थी? मत्ती और मरकुस के वृत्तांतों से यह संकेत मिलता है कि यीशु को पता था कि वह स्त्री कौन थी, उसने ज़्या किया था, और उसने ऐसा ज़्यों किया था। वे संकेत देते हैं कि थोड़ा हिचकिचाकर या बिना हिचकिचाए यीशु ने मुड़कर उस स्त्री की ओर देखा (मत्ती 9:22; मरकुस 5:32)।

आम तौर पर मसीह के प्रश्नों का उद्देश्य अपने बारे में जानकारी लेना नहीं, बल्कि दूसरों पर उन सच्चाइयों का प्रभाव छोड़ना होता था।[12] यहां भी कुछ ऐसा ही हुआ होगा। शायद वह अपने इर्द-गिर्द के लोगों को उस स्त्री के विश्वास के बारे में बताना चाहता था कि किस प्रकार उसके विश्वास ने उसके जीवन में आशीष दिलाई थी। शायद वह उस स्त्री को स्पष्ट करना चाहता था कि उसके साथ ज़्या हुआ था और ज़्यों हुआ था। लूका ने लिखा है:

> जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब कांपती हुई आई,[13] और उसके पांवों पर गिर कर सब लोगों के साम्हने बताया, कि मैंने किस कारण से तुझे छुआ, और ज़्योंकर तुरन्त चंगी हो गई। उस ने उस से कहा, बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से चली जा (लूका 8:47, 48)।

''कुशल से चली जा'' के आशीर्वाद से उसे आश्वासन मिला कि उसे मिली चंगाई स्थाई है और उसका रोग अब दोबारा नहीं आएगा।

उस स्त्री के जाने की कल्पना करें और फिर अपना ध्यान याईर पर लगाएं। वह यीशु को अपने घर ले जाने की कोशिश कर रहा था, जहां उसकी नन्हीं बेटी मृत्यु के द्वार पर पड़ी हुई थी। भीड़ को पीछे धकेलते हुए, उसने धीरे से बार-बार यह विनती की होगी: ''हे प्रभु, मेरी सहायता करो, कहीं देर न हो जाए। परमेश्वर, हमें जल्दी से वहां पहुंचा दे ताकि हमारे पहुंचने से पहले कहीं वह मर न जाए!'' अब उसे वहां खड़े रहकर मसीह के उस रोगी स्त्री से बात करने तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। यदि मैं याईर की जगह होता, तो मैं चीख पड़ता, ''यीशु, इसकी सहायता बाद में कर देना! यह तो बारह साल से बीमार है। एक-दो दिन और बीमार रहेगी तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मेरी नन्हीं लड़की को आपकी *अभी* आवश्यकता है!''

यदि यह सरदार देर होने से घबराया हुआ था, तो उसकी घबराहट निराशा में बदल गई होगी, ज़्योंकि किसी ने आकर बताया: ''तेरी बेटी मर गई: गुरु को दुख न दे'' (लूका 8:49ख)। पिता का मन अन्दर ही अन्दर बुझ गया होगा। आप में से कुछ लोग समझ सकते हैं कि मेरे कहने का ज़्या अर्थ है।

मसीह याईर की निराशा को जानता होगा। उसने प्यार से उससे कहा, ''मत डर; केवल विश्वास रख; तो वह बच जाएगी''[14] (लूका 8:50; मरकुस 5:36 भी देखिए)। विश्वास की यह कितनी बड़ी परीक्षा है!

विश्वास का प्रतिफल मिला (मत्ती 9:23-26; मरकुस 5:37-43; लूका 8:51-56)

यीशु याईर के साथ उसके घर की ओर बढ़ता रहा। उनके वहां पहुंचने पर लड़की को मरे चाहे अभी कुछ समय ही हुआ था, परन्तु ज़नाजे की तैयारी शुरू हो गई थी। उस जमाने में उस देश में, मुर्दे को सामान्यतया उसी दिन दफ़ना दिया जाता था। शोक मनाने के लिए भाड़े पर लिए गए लोगों की संख्या और शोर से पता चलता था कि परिवार की सामाजिक स्थिति ज़्या है।[15] इसलिए, अधिकारी के घर प्रवेश करने पर, मसीह ने ''लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते'' और ''भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा'' (मरकुस 5:38; मत्ती 9:23)। वहां ''बांसली बजाने वालों'' और ''बहुत रोने और चिल्लाने'' की तेज़ चीखें सुनाई दे रही थीं (मत्ती 9:23; मरकुस 5:38)।

उस दिन यीशु के सबसे कठिन कामों में से एक सम्भवतया उस शोर शराबे को बन्द कराना था, जिससे उसकी बात सुनी जा सके। उनका ध्यान अपनी ओर दिलाकर उसने उन्हें ''रोना बन्द'' करके वहां से ''चले जाने'' को कहा। उसने कहा, ''रोओ मत; वह मरी नहीं, बल्कि सो रही है''[16] (लूका 8:52; मत्ती 9:24; मरकुस 5:39)। उसके यह कहने पर, वह घर, जिसमें रोने की आवाज़ें आ रही थीं, ठहाकों में बदल गया (मत्ती 9:24; मरकुस 5:40)।[17] लूका बताता है, ''वे यह जानकर, कि मर गई है, उसकी हंसी उड़ाने लगे'' (8:53)। मैं भाड़े के कई रोने वालों को यह कहते हुए सुन सकता हूं, ''कैसा मज़ाक है! मैं इस साल पचास जनाज़ों में गया हूं और मैं *जानता* हूं कि मरा व्यक्ति कैसा होता है।''

मज़ाक करने वालों और अविश्वासियों को बाहर का रास्ता दिखाने के बाद (मरकुस 5:40क), मसीह अपने तीन चेलों पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ याईर और उसकी पत्नी को (मरकुस 5:37) उस कमरे में ले गया, जहां शव रखा हुआ था। पतरस, याकूब और यूहन्ना को प्रेरितों में ''प्रमुख'' माना जाता है। यह तीन में से पहला लिखित अवसर था, जब यीशु ने उन्हें विशेष ध्यान दिलाने के लिए अलग किया।[18]

इस नाटकीय दृश्य को अपने मन में उतारने का प्रयास करें। मसीह लड़की के बे-जान शरीर के पास चलकर गया, उसका हाथ पकड़ा, जो मृत्यु हो जाने के कारण ठण्डा पड़ चुका था। उसने धीरे से कहा, ''तलीता कूमी''-अरामी शब्द जिनका अर्थ है ''हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ!'' (मरकुस 5:41)। शब्द बड़े स्पष्ट थे, ऐसे शब्द जो सुबह के समय किसी बच्चे को जगाने के लिए कहे जा सकते हैं।[19]

तुरन्त, उस लड़की के ''प्राण लौट आए'' (लूका 8:55)।[20] ज़्या आप उसकी टिमटिमाती खुली आंखें देख सकते हैं? ज़्या आप उसके माता-पिता की बढ़ती धड़कनों

को सुन सकते हैं? मरकुस 5:42 कहता है कि वह ''तुरन्त उठकर चलने-फिरने लगी।''[21] ज़्या आप उसे भागकर अपने माता-पिता की बाहों में जाते हुए देख सकते हैं? ज़्या आप यीशु को मुस्कराते और घबराई हुई मां से अपनी लड़की के लिए खाना तैयार करने के लिए कहने की कल्पना कर सकते हैं (मरकुस 5:43; लूका 8:55)?[22]

फरीसियों की बढ़ती शत्रुता के कारण, यीशु इस घटना को गुप्त ही रखना चाहता था। उसने याईर और उसकी पत्नी को ''चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए'' (मरकुस 5:43; लूका 8:56 भी देखें)-परन्तु, सामान्य की तरह इस घटना की खबर ''सारे देश में फैल गई'' (मत्ती 9:26)।

परन्तु, जो दृश्य मैं आपके मन में बिठाना चाहता हूं, वह खुशी से पागल एक मां के अपनी बेटी को खाने के लिए विनती करने का है, जबकि एक मुस्कराता हुआ पिता उसे देख रहा है। यदि आप उस आदमी से पूछते, ''याईर, ज़्या तुम्हें विश्वास है?'' तो उसका डंके की चोट पर उज़र होता ''हां, है!''

''अन्धो, ज़्या तुम्हें विश्वास है?'' (मत्ती 9:27-34)

आंख के अन्धे का विश्वास (आयतें 27-31)

मत्ती के अनुसार, यीशु के याईर के घर से जाने के बाद, दो अन्धे यह पुकारते हुए कि ''हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर''[23] उसके पीछे-पीछे चल पड़े (आयत 27)। वे उसके पीछे उस घर तक चले गए, जहां वह ठहरा हुआ था (आयत 28क)। अन्त में, मसीह ने उनकी ओर मुड़कर पूछा, ''ज़्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं? उन्होंने उससे कहा, हां प्रभु। तब उसने उनकी आंखें छूकर कहा,[24] तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो। और उनकी आंखें खुल गईं'' (मत्ती 9:28ख-30क)। एक बार फिर, यीशु ने उनसे कहा कि वे यह बात किसी को न बताएं (आयत 30ख) और एक बार फिर यह खबर आग की तरह पूरे देश में फैल गई (आयत 31)।

मन के अन्धे का अविश्वास (आयतें 32-34)

घर पहुंचते ही, मसीह के इर्द-गिर्द भारी भीड़ जमा हो गई और उसने सिखाने तथा चंगाई की अपनी सेवकाई फिर से शुरू कर दी। दुष्टात्मा से ग्रस्त एक आदमी को, जो बोल नहीं सकता था,[25] उसके पास लाया गया (आयत 32)। जब यीशु ने दुष्टात्मा को निकाल दिया, तो वह आदमी बातें करने लगा। ''और भीड़ ने अचज़्भा करके कहा इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया'' (आयत 33)।

सामान्य की तरह, प्रभु के आलोचक भी वहीं थे। उन्होंने फिर अपना निन्दापूर्वक आरोप दोहराया: ''यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है'' (आयत 34)। पूर्वधारणा ने उनके कान बन्द कर दिए थे और उनके मन की आंखें अन्धी हो गई थीं (देखें मत्ती 13:15)। मसीह जो भी करे, उन्होंने उस पर विश्वास न करने की ठान ली थी।

''नासरत के लोगो, ज़्या तुज़्हें विश्वास है?''
(मज़ी 13:54-58; मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-30)

याईर की बेटी को चंगा करने के थोड़ी देर बाद (मरकुस 5:37-43), यीशु अपने गृहनगर नासरत में चला गया (मरकुस 6:1)। यह सज़्भवतया गलील की उसकी तीसरी यात्रा का पहला पड़ाव था[26] (मरकुस 6:6; देखें मज़ी 9:35)।

लूका ने अपने वृज़ांत में स्पष्टतया यह समझाने के लिए कि अपनी गलीली सेवकाई के दौरान उसने नासरत के बजाय कफ़रनहूम को अपना मुज़्यालय ज़्यों बनाया था (देखें लूका 4:16-31) नासरत में पहले मसीह के ठुकराए जाने को लिखा था। इसलिए बहुत से लेखकों का यह मानना है कि यीशु नासरत में दो बार ठुकराया गया था: एक बार अपनी गलीली सेवकाई के आरज़्भ में और दूसरी बार उस सेवकाई के अन्त के निकट। ऐसा हो सकता है,[27] परन्तु मुझे लगता है कि मज़ी और मरकुस के वृज़ांत लूका के वृज़ांत के पूरक हैं, ज़्योंकि हर वृज़ांत में, यीशु आराधनालय में जाकर सिखाने लगा (मज़ी 13:54; मरकुस 6:2; लूका 4:16-21)। हर वृज़ांत में लोग पहले उसकी बातों से प्रभावित हुए (मज़ी 13:54; मरकुस 6:2; लूका 4:22) और फिर उन्हें ठोकर लगी, ज़्योंकि (उनकी नज़र में) वह ''गलियों में खेलने वाला लड़का'' ही तो था (देखें मज़ी 13:55-57; मरकुस 6:3, 4; लूका 4:22)। यह सच है कि मज़ी और मरकुस वे विवरण देते हैं, जो मज़ी नहीं देता, परन्तु यह भी सच है कि लूका वह जानकारी देता है, जो मज़ी और मरकुस में नहीं मिलती; परन्तु ये विचार विरोधाभासी नहीं, केवल पूरक हैं।

जो भी हो, तीनों वृज़ांत पर्याप्त रूप में एक-दूसरे के इतने समान हैं कि उनका अध्ययन इकट्ठे करना लाभदायक हो सकता है। इस घटना को विस्तार-पूर्वक अगले प्रवचन में बताया गया है, परन्तु अभी कुछ नोट्स ही हैं, विशेषकर विश्वास के महत्व के हमारे विषय के बारे में।

विश्वास सज़्भव (मज़ी 13:54; मरकुस 6:1, 2; लूका 4:16-22)

यीशु नासरत को लौट गया, जहां उसका बचपन बीता था, और वह आराधनालय में जाया करता था।[28] आराधना में भाग लेने का अवसर मिलने पर उसने यशायाह 61 अध्याय से पढ़ा था, जो आने वाले मसीहा के बारे में एक प्रमुख भविष्यवाणी थी। फिर उसने कहा था कि ''आज ही यह लेख तुज़्हारे सामने पूरा हुआ है'' (लूका 4:21)। अन्य शज़्दों में, उसने वह होने का दावा किया, जिसकी भविष्यवज़्ता ने बात की थी।

विश्वास ठुकराया गया (मज़ी 13:54-58; मरकुस 6:2-6; लूका 4:22-30)

प्रतिक्रिया मिली-जुली थी। उसके सुनने वाले इस बात पर गर्व करते थे कि ''नगर का एक लड़का इतना बड़ा हो गया'' था, लेकिन उसके दावे उन्हें अपमानजनक लगते थे। ऐसे विचारों की कल्पना करना कठिन नहीं है, जो उनके मनों में आते होंगे: ''बचपन में वह मेरे लड़कों के साथ ही तो खेला करता था! वह अपने आप को समझता ज़्या है?'' ''उन्होंने उसके

कारण ठोकर खाई'' (मत्ती 13:57)। न्यू सैंचुरी वर्ज़न[29] में कहा गया है कि ''लोग यीशु से परेशान थे।''

वे सोलह या अधिक मील दूर कफ़रनहूम में किए गए उसके अद्भुत कार्यों से अवगत थे, और चाहते थे कि वह उनके लिए कोई चकित करने वाला करतब दिखाए (देखें लूका 4:23)। वे स्पष्टतया वैसा ही ''चिह्न'' चाहते थे जैसा फरीसियों ने चाहा था (देखें मत्ती 12:38-42)। उनकी यह इच्छा विश्वास का नहीं, बल्कि अविश्वास का संकेत था। मसीह ने नासरत में कुछ आश्चर्यकर्म किए थे, जैसे उसने ''केवल थोड़े से बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया'' (मरकुस 6:5)[30]-परन्तु ''उसने वहां उनके अविश्वास के कारण बहुत से सामर्थ के काम नहीं किए'' (मत्ती 13:58)।

जब लोग उसकी जान लेने पर उतारू हुजूम में बदल गए, तो यीशु ने अफ़सोस के साथ उन्हें बताया कि नबी का आदर उसके अपने देश में नहीं होता (मत्ती 13:57; मरकुस 6:4; देखें यूहन्ना 4:44)। यीशु इन लोगों को जानता था। वह उन्हीं के साथ पला-बढ़ा था और रहा था, उन्हीं के साथ काम करता था और उनकी सहायता करता था। वह उनसे प्रेम करता था। इससे उसका मन अवश्य दुखी हुआ होगा कि उन्होंने उस में विश्वास करने से इनकार कर दिया था। मरकुस 6:6 कहता है, ''उसे उनके अविश्वास पर आश्चर्य हुआ।'' एक अनुवाद में कहा गया है, ''उसके लिए इस तथ्य को स्वीकार करना कठिन था कि उन्होंने उसमें विश्वास नहीं लाया'' (लिविंग बाइबल)।

सारांश

एक ओर, हमने याईर का विश्वास, रोगी स्त्री का विश्वास और दो अन्धों का विश्वास देखा। दूसरी ओर हमने याईर के घर में रोने वालों का अविश्वास, फरीसियों का अविश्वास और नासरियों का अविश्वास देखा है। जीवन में इससे महत्वपूर्ण प्रश्न कोई नहीं है कि ज़्या हमें यीशु में विश्वास है ? जब तक हमें विश्वास नहीं है, प्रभु हमारे जीवनों में आशीष नहीं दे सकता (देखें मरकुस 6:5)। मसीह पर अध्ययन जारी रखते हुए, मेरी प्रार्थना है कि आपका विश्वास उसमें बढ़े (यूहन्ना 20:30, 31; रोमियों 10:17)।

नोट्स

पहले की तरह, हमारे इस पाठ के हर भाग में प्रवचन के लिए काफ़ी ज्यादा सामग्री है। आप कह सकते हैं कि मैं याईर की बेटी को जिलाने की कहानी और ''कोष्ठक में आश्चर्यकर्म'' में उलझ गया। मुझे इन घटनाओं पर प्रचार करना हो, तो मैं इस प्रवचन को ''अब मत डर'' नाम ही दूंगा। मैं याईर की घबराहट और निराशा पर ज़ोर दूंगा, जो छोटी लड़की पर पूरा ज़ोर लगा देने के बावजूद उसकी थी, परन्तु फिर भी खबर आई कि वह मर गई है। वहां पर, यीशु ने कहा, ''मत डर; केवल विश्वास रख'' (मरकुस 5:38; लूका 8:50)। जब सारी कोशिश करने और अपने पूरे संसाधन लगा देने के बाद, लगे कि हमारी प्रार्थनाओं का उज़र नहीं मिलेगा, तब विश्वास काम आता है। मेरी प्रासंगिकता ''केवल

विश्वास रख'' पर हो सकती है: ''केवल परमेश्वर में विश्वास रखें, जो तुम से प्रेम करता है''; ''केवल परमेश्वर में विश्वास रख, जो सब वस्तुओं को भलाई के लिए इकट्ठा कर सकता है''; और ऐसी बातें।

यीशु के दो अन्धों को चंगा करने की संक्षिप्त कहानी प्रवचन के लिए आधार हो सकती है–परन्तु हम अन्धे को यीशु द्वारा चंगा होने का और नाटकीय वृज़ांत बाद में देखेंगे: जिसमें बरतिमाई और उसका साथी शामिल थे (मज़ी 20:29–34; मरकुस 10:46–52; लूका 18:35–43)।

इस पाठ के बाद नासरत में यीशु के ठुकराए जाने पर एक प्रवचन है, जो बारनेट ने इस कहानी पर आधारित ''अब कोई उबाऊ रविवार नहीं'' नामक प्रवचन तैयार किया था।[31]

टिप्पणियां

[1]इस पर चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में ''सबने चकित होकर परमेश्वर की बड़ाई की'' पाठ देखें। [2]''आराधनालय के अधिकारी'' एक मिश्रित यूनानी शज़्द से अनुवाद किया गया है, जिसका मूल अर्थ ''जो आराधनालय पर हैं'' है। [3]सुसमाचार के वृज़ातों में ''पुरनिया'' का अर्थ कई बार ''पूर्वज'' होता है (मज़ी 15:2), परन्तु आम तौर पर इसका इस्तेमाल उस समय के किसी यहूदी अगुवे के लिए होता है। यहूदी पुरोहिततन्त्र में, आराधनालय के पुरनिये शास्त्रियों से नीचे के पद पर होते थे। ''पुरनिया'' शज़्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में धार्मिक अगुओं के लिए भी होता था। यीशु ने अज़्सर ''पुरनियों, और प्रधान याजकों और शास्त्रियों'' द्वारा विरोध करने की बात की (मज़ी 16:21; देखें 21:23)। महासभा को कई बार ''पुरनियों की महासभा'' कहा जाता था (लूका 22:66)। [4]आराधनालय के अधीन अधिकारी को ''सेवक'' कहा जाता था (इस पाठ में आगे लूका 4:20 देखें)। [5]मज़ी के वृज़ांत में, याईर ने कहा कि उसकी पुत्री ''अभी मरी है'' (मज़ी 9:18)। यह सज़्भवतया पिता के दुखी मन से कहने का अर्थ था कि ''मेरे आने पर वह लगभग मर ही गई थी और अब खत्म हो चुकी होगी। सो हमें जल्दी चलना चाहिए!'' वैद्य लूका ने ज़ोर देकर कहा कि ''वह मरने पर थी'' (लूका 8:42)। [6]यीशु सज़्भवतया कफ़रनहूम में लौट गया। ''यह कौन है?'' पाठ पर विचार करें। [7]जे. डज़्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पज़्लिशिंग कं., 1914), 352. [8]''अशुद्ध'' कहने का व्यावहारिक पहलू था: कई बार औपचारिक ''अशुद्धता'' संक्रामक होती थी। ''शुद्ध'' और ''अशुद्ध'' के लिए बने नियमों से रोग को फैलने से रोकने में सहायता मिलती है। [9]फ़िज़ियोलॉजी या शारीर-विज्ञान ''जीवित प्राणियों के कार्यों, गतिविधियों तथा प्रक्रियाओं की जीव वैज्ञानिक साइंस'' है (*अमेरिकन हैरिटेज डिज़्शनरी,* चौथा संस्क. [2001], एस. वी. ''फ़िज़ियोलॉजी'')। पहली शताज़्दी में, फ़िज़ियोलॉजी या शारीर-विज्ञान का ज्ञान बहुत अविकसित था। [10]''आंचल'' लोगों को व्यवस्था का स्मरण दिलाने के लिए आवश्यक झालरों में से एक को कहा गया हो सकता है (व्यवस्थाविवरण 22:12)। ''वस्त्र के आंचल को छूना'' इस बात का संकेत देता है कि व्यज़्ति पहले ही किसी विषय को समझाने या किसी लक्ष्य को प्राप्त करने लगा है।

[11]इससे यह समझाने में सहायता मिल सकती है कि समय-समय पर उसे विश्राम की आवश्यकता ज़्यों पड़ती थी और उसके लिए प्रार्थना इतनी महत्वपूर्ण ज़्यों थी। [12]इसका एक उदाहरण यूहन्ना 6:5, 6 में है। [13]वह इसलिए कांप रही हो सकती है, ज़्योंकि वह जानती थी कि उसके स्पर्श से कोई और भी ''अशुद्ध'' हो गया था (लैव्यव्यवस्था 15:19)। रज़्बी उसे फटकार लगाते परन्तु यीशु ने नहीं लगाई। [14]''बच जाएगी'' अभिव्यज़्ति की उज़्मीद तभी होती यदि लड़की ''केवल'' बीमार ही होती। एक बार फिर मैं ज़ोर देता हूं कि

मुर्दे को जिलाने का आश्चर्यकर्म बीमार को चंगा करने के आश्चर्यकर्म के जैसा ही था। जो लोग आश्चर्यकर्म से चंगाई देने की शक्ति होने का दावा करते हैं, उन्हें मुर्दों को जिलाकर अपने दावे को पक्का करना चाहिए। [15]निर्धन भी कम से कम शोक के लिए एक स्त्री को बुलाने की उम्मीद तो रखते ही थे। [16]''नींद'' मृत्यु के लिए एक सामान्य कोमल वैकल्पिक शब्द है (देखें यूहन्ना 11:11-14)। ''कब्रिस्तान'' का मूल अर्थ ''सोने का स्थान'' है। [17]ठहाके हंसी और मज़ाक के ही होंगे। यीशु की बात की प्रतिक्रिया का भाग भाड़े पर आए विलाप करने वालों का यह भय होगा कि उन्हें पैसे नहीं मिलेंगे। [18]दो अन्य अवसर रूपान्तरण और गतसमनी बाग के समय के थे (मत्ती 17:1; मरकुस 14:33)। यीशु के लिए ये तीन अवसर विशेष ज़्यों थे, हम नहीं जानते। शायद भविष्य में उनकी भूमिकाओं के कारण: पतरस आरम्भिक कलीसिया में एक अगुआ था; याकूब पहला शहीद था; जहां तक हम जानते हैं, यूहन्ना दूसरे किसी भी प्रेरित से अधिक समय तक काम करता रहा। ये तीनों, निश्चय ही उन लोगों में से थे, जिन्होंने उसमें पहले विश्वास किया था। [19]यह वाक्य मैज़गर्वे एण्ड पैंडलटन, 356 से लिया गया है। [20]यह यीशु द्वारा मुर्दे को जिलाने की दूसरी लिखित घटना है। पहली नाइन की विधवा के पुत्र को जिलाने की थी (लूका 7)। तीसरी लाज़र को जिलाने की होगी (यूहन्ना 11)।

[21]छोटी लड़कियों के बारे में जानने के कारण, मैं कल्पना करता हूं कि वह थोड़ा उछली भी। [22]बीमार होने से लड़की की भूख मर गई होगी, और उसने कुछ समय से कुछ नहीं खाया होगा। यह इस तथ्य का चित्र के रूप में उदाहरण है कि परमेश्वर हमारे लिए वह नहीं करता, जो हम अपने लिए कर सकते हैं। [23]''दाऊद की सन्तान'' यहूदियों द्वारा 2 शमूएल 7:12 के आधार पर मसीहा के लिए प्रस्तुत किया जाने वाला शीर्षक था। [24]यीशु उन लोगों को, जिन्हें वह चंगा करता था, कई बार छूता था और कई बार नहीं भी। शक्ति उसके ढंग में नहीं, बल्कि, स्वयं में थी। [25]उस आदमी को दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के साथ-साथ कोई शारीरिक व्याधि होगी (बहरापन, जो गूंगा होने के कारण बढ़ गया था), परन्तु उसका गूंगापन दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के कारण ही होगा (देखें मरकुस 9:17)। [26]तीसरी बार जाने का अध्ययन हम अगले पाठ में करेंगे। [27]यीशु के लिए नासरत में जाना और उन्हें एक और अवसर देना निश्चय ही उसके करुणापूर्ण स्वभाव से मेल खाता था। [28]लूका के वृत्तांत में उस समय तक की आराधनालय की सेवा का सबसे विस्तृत चित्रण दिया गया है। आराधनालय की सेवाओं के बारे में जितना हम जानते हैं, वह अधिकतर कई वर्ष बाद लिखे गए बाइबल से बाहर के स्रोतों से मिलता है। [29]*द आन्सर* (डैलस: वर्ड बाइबल्स, 1993), 980. [30]मरकुस का वृत्तांत कहता है कि यीशु ''वहां कोई सामर्थ का काम न कर *सका,* केवल थोड़े से बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया'' (मरकुस 6:5)। जब भी बाइबल यह कहती है कि परमेश्वर (या यीशु) कोई काम नहीं कर सका, तो यह समझ लें कि इसका अर्थ ''इसे करना उसकी इच्छा और उद्देश्य *से मेल खाता* नहीं होगा'' है।

[31]जो बारनेट, *लिव! विद पीस, पावर, एण्ड परपज़,* ट्वंटियथ सैंचुरी सरमन्स सीरीज़, अंक 11 (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1978), 118-25.